Title: Need to adopt a resolution paying tribute to the innocent sikhs killed by the terrorists in the Chattisinghpura in Jammu and Kashmir.

सरदार बूटा सिंह (जालौर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज हम लोग बहुत दुखी हृदय के साथ इस सत्र के लिए सुबह जब यहां मिले तो हमने प्रयास किया कि सदन की कार्यवाही शुरु होने से पहले देश के अन्दर पाकिस्तानी आतंकवादियों ने और खास तौर से पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का जो बहुत बड़ा हमला किया, उसकी निन्दा की जाए। कश्मीर की वादी में चट्टीसिंहपुरा के गुरुद्वारे में प्रार्थना करते हुए बहुत सारे सिख भाईयों, बच्चों, देवियों, वृद्धों को बंदूक का निशाना बना कर भून डाला और वह भी उस दिन जब भारतवर्ष में अमेरिका के माननीय राष्ट्रपति महोदय का पदार्पण हुआ। उस दिन देश के बड़े-बड़े समाचार पत्रों में उन देशभक्त सिख भाईयों, बहनों, बच्चों, महिलाओं, बुजुर्गों की लाशों की तस्वीरें छपीं। जब अमेरिका के राष्ट्रपति दोनों सदनों के सदस्यों को केन्द्रीय कक्ष में सम्बोधित कर रहे थे तो उनके हृदय से हमदर्दी के शब्द उतरे। उन्होंने कहा कि मुझे दुख है और मेरी सहानुभूति उन बच्चों, बहनों, माताओं और बुजुर्गों के साथ है, जिनको आतंकवादियों ने भून दिया। हमने कल के अखबार में भी पढ़ा कि वह अमेरिका जाकर इस त्रासदी को नहीं भूले। उन्होंने वहां जाकर इस बात की पुष्टि कर दी कि पाकिस्तान के आतंकवादियों ने कश्मीर में निहत्थे, इन्नोसेंट और देशभक्त सिखों का नरसंहार किया। इसकी निन्दा पूरे विश्व में हो रही है। आज पाकिस्तान का रूप अफगानिस्तान और यूरोप में भी देखने को मिल रहा है लेकिन हिन्दुस्तान को इसकी सबसे बड़ी कीमत अदा करनी पड़ रही है। अगर इस सदन में भारत सरकार की ओर से ऐसा प्रस्ताव आता तो पूरे देश के लोग इस बात के प्रति बहुत हमदर्दी रखते। मेरे साथी श्री जे.एस. बराड़ और पंजाब के हमारे पार्टी के दूसरे सभी सदस्य सुबह से इंतजार कर रहे थे कि हमें इस विषय पर बोलने का मौका मिलेगा। हम आशा करते थे कि बहुत गंभीरता और प्यार के साथ उन सिखों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सदन में मौन धारण किया जाएगा। सर्वोच्च सदन की ओर से हम उन परिवारों के प्रति, समूचे सिख समुदाय के प्रति दुनिया के लोगों के सामने यह सिद्ध कर दें कि पाकिस्तान कैसा दरिंदा देश है और कैसे आतंकवादी हिन्दुस्तान में घुसपैठ करके रोजाना सैंकड़ों लोगों को मार रहे हैं?

आपने मुझे यहां बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि औपचारिक रूप से जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरु हो, चाहे माननीय राष्ट्रपति के अभिभाषण पर प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा ही क्यों न हो, सबसे पहले पूरे सदन, के सभी दल, सभी पक्ष उन शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मौन धारण करके शोक प्रस्ताव पास करें।

श्री जगमीत सिंह बराड़ (फरीदकोट): आनरेबल डिप्टी स्पीकर साहब, सरदार बूटा सिंह जी द्वारा जिस अफसोसनाक घटना का जिक्र किया गया है, मैं अपने आपको उससे जोड़ता हूं। मैं ज्यादा समय न लेकर दो तीन बातें आपके जरिये इस सदन से कहना चाहूंगा। एक मामला क्रास बार्डर टैरेरिज्म का है जिसमें 35 निर्दोष सिक्खों की हत्या कर दी गई। पहले तो वहां कश्मीरी पंडितों को निकाला गया। अब पाकिस्तान की साजिश है कि कश्मीर के 140 गांवों में जो सिक्ख रहते हैं , उन्हें वहां से निकालकर वह अपने एजेंडा में कामयाब हो जाये। उन 35 सिक्खों की हत्या के बाद अंतिम अरदास में 25 हज़ार से ज्यादा लोग वहां आये जहां यह खतरा था कि पता नहीं कब उन लोगों को गोली मार दी जाये। इसमें किसी पार्टी का कोई दोष नहीं हो सकता लेकिन अफसोस की बात तो यह है कि उस अंतिम अरदास के वक्त न इस देश के प्रधानमंत्री जी, न गृह मंत्री जी और न ही जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री शामिल हुये। इससे वहां के लोगों में बहुत बड़ा रोष पाया गया कि इतने बड़े दुखदायी कांड पर देश का कोई जिम्मेदार नेता उनके साथ सहानुभूति करने के लिये नहीं आ सकता तो इससे बड़ी अफसोस की बात और क्या हो सकती है।

हमने सुबह इस बात को माननीय स्पीकर साहब के सामने बड़ी गंभीरता से रखा था। जिस दिन क्लिंटन साहब यहां आये थे, हम उस दिन इस मामले को उठाने जा रहे थे लेकिन भारत की अपनी प्रतिष्ठा, हमारे देश की सरकार और एक मेन अपोज़ीशन पार्टी के नाते हम खामोश रहे क्योंकि इस घटना को केवल 12 घंटे ही हुये थे लेकिन आज जब हमने सदन में बोलने के लिये नोटिस दिया है that is the protection of the minorities all over the country and especially in Jammu and Kashmir. मैं इस मुद्दे पर आनरेबल डिप्टी स्पीकर साहब से रिक्वैस्ट करूंगा कि आज जब दोपहर को दो-ढाई बजे धन्यवाद प्रस्ताव शुरु होगा , उससे पहले अगर सदन में दो मिनट का मौन प्रस्ताव सरकार लेकर आयें , इससे सारे देश पर यह इम्प्रेशन पड़ेगा कि पार्लियामेंट और यह देश इस मुद्दे को लेकर कितना गंभीर है और मैं समझता हूं कि सारे सदन की सहानुभूति उन 35 निर्दोष शहीद सिक्खों के परिवार के प्रति जाहिर होगी।

इससे ज्यादा बात मैं यह कहना चाहूंगा कि प्रधानमंत्री जी ने डरबन में कॉमनवैल्थ मीटिंग्स से आते समय यह बात कही कि हम वहां डैमोक्रेसी बहाल करने के लिये हिस्सा डालेंगे लेकिन जनरल मुशरफ ने कैम्पों में जो लोग क्रॉस बार्डर टैरेरिज्म फैला रहे हैं, उनको मुखातिब करते हुये कहा कि हालांकि इस्लाम एक शांतिप्रिय धर्म है लेकिन जिहाद को हम सैंक्शन देते हैं और उन्होंने क्रॉस बार्डर टैरेरिज्म को रिक्गनाइज किया है। इस प्रकार हमारी विदेश नीति बिलकुल फेल हो गई है। प्रधानमंत्री जी और सरकार को इस बात को गंभीरता से लेना चाहिये और मुझे उम्मीद है कि आप हमारी बात मानेंगे और दो मिनट के मौन के लिये इनकी तरफ से प्रस्ताव लायेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय : मि. हन्नान मोल्लाह।

श्री बलबीर सिंह (जालंधर): डिप्टी स्पीकर साहब, सरदार बूटा सिंह जी और श्री बराड़ जी ने जो कहा है, मैं उनसे एसोसिएट करते हुये कहना चाहता हूं कि सरकार की तरफ से औपचारिक रूप से दो मिनट मौन के लिये प्रस्ताव आये।

संसदीय कार्य मंत्री तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री प्रमोद महाजन) : हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है अगर सारा सदन श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता है।

श्री पवन कुमार बंसल : यह सब तरफ की बात है।

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI : Sir, the Parliamentary Affairs Minister has agreed. In the tomorrow's List of Business, the first item should be obituary reference.

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, उसी विषय पर हमारा भी नोटिस है। चट्टीसिंहपुरा में जो आतंकवादियों ने नर-संहार किया गया है, उस पर हमने नोटिस दिया है।

MR. DEPUTY-SPEAKER: If you do not allow him to speak, I will have to adjourn the House.

...(*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have already conveyed. Now, resume your seat.

...(*Interruptions*)